श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ

(मानित विश्वविद्यालय), कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र नई दिल्ली- 110016

संशोधित नवीन पाठ्यक्रम

दिनांक : २९-३०/०१/२०१८

ज्योतिष विभाग, वेदवेदाङ्गसंकाय

कक्षा - द्विवर्षीय ज्योतिष भूषण एडवांस डिप्लोमा पाठ्यक्रम

<u>प्रथम सत्र</u>

प्रथम पत्र १०० अंक

(ताजिक)

इकाई	विषय	अंक	दिन सं.
I	**वर्ष कुण्डली निर्माण** राशि स्वरूप, राशियों के मित्रामित्र, वर्ष प्रवेश साधन, तिथि साधन, वर्षफल निर्माण विधि, (ग्रह स्पष्टीकरण, लग्नसाधन, दशम लग्न साधन, ससन्धिद्वादशभाव साधन पञ्चवर्गीबलसाधन-स्वगृह उच्चबलसाधन, हद्‌दासाधनविधि, द्रेष्काण निरूपण, नवांशसाधन ग्रहों के उच्चनीच, द्वादशवर्गसाधन, द्वादशभावों का फलविचार।	25	8
II	पञ्चाधिकारी निर्णय- मुन्थासाधन, त्रिराशीशविचार, ताजिक मत से दृष्टि विचार, ताजिक मत से मित्र, शत्रु आदि विचार, वर्षेश निर्णय, ग्रहों के दीप्तांश, इक्कबालादि सोलह योगों के लक्षण एवं शुभाशुभ फल विचार, हर्षबल साधन ।	25	8
III	50 सहमों के नाम, पुण्य, गुरु, ज्ञान, यश, तात, माता, मृत्यु, धन, कार्यसिद्धि, उद्वाह सहमों का साधन व फल विचार। कृशांश	25	8

	साधन, पात्यांश दशासाधन, पात्यांश अन्तर्दशा साधन, वर्षेश के दृष्टियोग से ग्रहों का उत्तम-मध्यम-हीनबल के अनुसार फल विचार-।		
IV	वर्षकृष्डली के द्वारशभावों का शुभाशुभफलविचार, मास एवं दिन प्रवेश प्रकार-, मासेश साधन एवं फल, दिनेश साधन एव फल, स्वप्नचिन्ता, भोजनचिन्ता, भोजन पदार्थ ज्ञान , मुद्दादशासाधन, त्रिपताकिचक्रनिर्माण, त्रिपताकिचक्र में ग्रह स्थापना, वेध विचार, मुथहा साधन एवं फल।	25	8

प्रथम सत्र

द्वितीय पत्र १०० अंक

(बृहद्वास्तुमाला)

इकाई	विषय	अंक	दिन सं.
I	गृहनिर्माण प्रयोजन, गृहारम्भ में कालशुद्धि, ग्रामवास में शुभाशुभ फल, वर्ग विचार, योनि विचार, वर्णपरत्वेन दिग्विचार, दिग्दशाक्रम और फल, वर्णपरत्वेन भूमिविचार, भूमि परीक्षा, काकिणी विचार ।	25	8
II	भूशोधन, खात में शुभाशुभ फल, खातविधि, शिलान्यास विधि, निषिद्धकाष्ठ, दिक्परत्वेन, गृहविभाग, शल्यानयनप्रकार, अहिबल चक्र ।	25	8
III	पिण्डानयनप्रकार, दिक्साधन, आयाद्यानयन, गृहमेलनादिविचार, विभिन्न मत से आयविचार, ग्रहमैत्री विचार, नाडी-विचार ।	25	8
IV	कालशुद्धिविचार, मासफल, त्याज्यमास, ग्राह्यमास, राहुमुखविचार, नक्षत्रशुद्धि गृहायुष्यविचार, वृषवास्तुचक्र, द्वारचक्र, द्वारनिर्णय, विविधगृहप्रवेश लग्नविचार, कुम्भचक्र, जीर्णगृहप्रवेशमुहूर्त,		8

	नूतनगृहप्रवेश मुहूर्त ।		

प्रथम सत्र

तृतीय पत्र

(फलित)

इकाई	**विषय**	**अंक**	**दिन सं.**
I	राशि व नक्षत्र के गुणधर्म, भाव और उनके गुणधर्म, ग्रह व उनके गुणधर्म, गुलिक आदि विचार, ग्रहों का रश्मिफल विचार, ग्रहों की अवस्थाएँ - बालादि, जागृतादि, दीप्तादि।	25	8
II	षोडशवर्ग परिचय, षडवर्ग साधन	25	8
III	**ग्रहबल-** षड़बलसाधन	25	8
IV	ग्रह दृष्टि विचार (पाद, पूर्ण, तिर्यक, गुप्तस्नेहा, प्रत्यक्ष स्नेहा, गुप्त वैरा, गुप्त स्नेहा आदि)	25	8

प्रथम सत्र

चतुर्थ पत्र-१००

भाग-१ (५०)

	विषय	**अंक**	दिन सं.
I	जातकालङ्कार अध्याय- 2	25	8
II	जातकालङ्कार अध्याय- 3	25	8
	भाग-II (५०)		

III	मुहूर्त चिंतामणि नक्षत्र प्रकरण (श्लोक संख्या 1-30)	25	8
IV	मुहूर्त चिंतामणि नक्षत्र प्रकरण (श्लोक संख्या 31-63)	25	8

द्विवर्षीय ज्योतिष भूषण एडवांस डिप्लोमा पाठ्यक्रम

द्वितीय सत्र

प्रथम पत्र १०० अंक

(सामुद्रिक)

इकाई	विषय-विवरण	अंक	दिन सं.
I	सामुद्रिक शास्त्र का आधार, शुभाशुभ लक्षणों का फल, समुद्रऋषि द्वारा सामुद्रिक शास्त्र का निर्माण, प्रयोजन सामुद्रिक शास्त्र का इतिहास।	25	08
II	मानव शरीर में आठ अंगों का कथन, पूर्व जन्मकर्म फलानुसार लक्षणों की उत्पत्ति, पुरुष एवं नारी अष्टांग लक्षण एवं फल।	25	08
III	पुरुष एवं नारी पादतल लक्षण एवं फल,, पादतल में अशुभ लक्षण, पादांगुलि लक्षण, जानु लक्षुण, जंघादि लक्षण, कटि लक्षण, हस्त का आकार, लक्षण एवं फल, हस्तगत विविध रेखाओं के लक्षण एवं फल, बाहु लक्षण एवं फल, अंगुलि एवं अंगुष्ठादि के लक्षण एवं फल,ग्रीवा-चिबुक-कपोल-मुख-अधर-दंत-नासिका-नेत्र-भ्रू-कर्ण-केश-ललाट के लक्षण एवं फल।	25	08
IV	तिल आदि का फल, छिक्का लक्षण एवं फल, हास्य लक्षण एवं फल, रोदन लक्षण एवं फल	25	08

द्वितीय सत्र

द्वितीय पत्र-१०० अंक

(अरिष्टयोग)

इकाई	विषय-विवरण	अंक	अध्यापन दिवस
I	**अरिष्टयोग**- आयुनिश्चितता, अरिष्टपूर्व आयु सद्योरिष्ट (अरिष्टदा) ग्रहस्थिति, पिता आदि को अरिष्ट, सगर्भ मातृमरणयोग, वर्षमध्य में मरण, योगारिष्ट	25	08
II	**अरिष्टभङ्ग**-चन्द्रकृत-शुभग्रहकृत-गुरुकृतारिष्टभङ्ग, लग्नेशकृताऽरिष्टभङ्ग, राशीशकृत राहुकेतुकृत अरिष्टभङ्ग।	25	08
III	अल्पायुयोग, मध्यमायुयोग, दीर्घायुयोग, पूर्णायुप्रमाण, अमितायु, देवसदृश आयुप्रदयोग ।	25	08
IV	**विभिन्न जीवों का आयु प्रमाण**- अरिष्टदशा, छिद्रग्रह, द्रेष्काणस्वरुप, जीवदेहमृत्युसंज्ञा, निर्याणहेतु विचार, निर्याण समय विचार ।	25	08

<u>द्वितीय सत्र</u>

तृतीय पत्र -१०० अंक

(अष्टक वर्ग)

इकाई	विषय-विवरण	अंक	अध्यापित दिन
I	**अष्टकवर्ग सामान्य परिचय**- सूर्याष्टकवर्ग निर्माण चन्द्राष्टकवर्ग निर्माण भौमाष्टकवर्ग निर्माण बुधाष्टकवर्ग निर्माण गुरु अष्टकवर्ग निर्माण शुक्राष्टकवर्ग निर्माण	25	

	शनि अष्टकवर्ग निर्माण लग्नाष्टकवर्ग निर्माण		
II	**सर्वाष्टकवर्ग निर्माण** त्रिकोणशोधन, एकाधिपत्यशोधन राशि व ग्रहगुणक शोध्य पिण्ड	25	
III	**अष्टकवर्गायुनिर्णय प्रकार** 01) भिन्नाष्टकवर्गायु 02) सर्वाष्टकवर्गायु मण्डलशोधन, आयुहरण सौर वर्ष से सावन वर्ष में परिवर्तन	25	
IV	**अष्टकवर्ग द्वारा फलादेश** व गोचरफल विचार	25	

द्वितीय सत्र

चतुर्थ पत्र -१०० अंक

शास्त्रीय अध्ययन

भाग- (क)

इकाई	विषय-विवरण	अंक	अध्यापन दिवस
I	मुहूर्तचिन्तामणि (विवाहप्रकरण-श्लोक 1 से 26)	25	8
II	मुहूर्तचिन्तामणि (विवाहप्रकरण-श्लोक 27 से 51)	25	8
III	मुहूर्तचिन्तामणि (विवाहप्रकरण-श्लोक 52 से 78)	25	8
IV	मुहूर्तचिन्तामणि (विवाहप्रकरण-श्लोक 7 से समाप्ति पर्यन्त)	25	8

द्विवर्षीय ज्योतिष भूषण एडवांस डिप्लोमा पाठ्यक्रम

तृतीय सत्र

प्रथम पत्र १०० अंक

इकाई	विषय	अंक	दिन सं.
I	**राजयोगः-** विविधराजयोग भेद, पञ्चमहापुरुषयोग, राजयोगों के लक्षण व फल प्राप्तिकाल, सुनफा-अनफा-दुरुधरा- केमद्रुमयोग व उनका फल वेशि-वाशि व उभयचरी योग, शकट, पारिजात, चन्द्राधियोग, लग्नाधियोग	25	8
II	गजकेसरी, अमला, पर्वत, काहल, मालिका, चामर, शंख, भेरी, मृदङ्ग, श्रीनाथ, लक्ष्मी, कूर्म, कलानिधि एवं अंशावतारयोग एवं फल।	25	8
III	नाभसयोग सम्पूर्ण	25	8
IV	द्विग्रहयोग, त्रिग्रहयोग, चतुर्ग्रहयोग, पञ्चग्रहयोग, षड्ग्रहयोग।	25	8

तृतीय सत्र

द्वितीय पत्र-१०० अंक

रोग व ज्योतिष

इकाई	विषय	अंक	दिन सं.
I	**यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे का सिद्धान्त-** आयुर्वेद एवं ज्योतिषशास्त्रीय दृष्टि से रोगों के कारण, कर्मजन्य रोगों एवं कालजन्य रोगों का परिज्ञान, रोग परिज्ञान के सिद्धान्त, रोगज्ञान का प्रमुख उपकरण, ग्रहयोग, योग के सात भेद, योगों के तीन प्रमुख तत्त्व ग्रह राशि और भाव, रोगों के सन्दर्भ में ग्रहों और राशियों का परिचय, अङ्गों की प्रतिनिधि राशियाँ, मेषादि द्वादश राशिजन्य रोग, रोगों के विचारार्थ भावों का परिचय, अङ्गों के प्रतिनिधि भाव, लग्न द्रेष्काण के आधार पर कालपुरुषांगों का विन्यास।	25	8

II	ग्रहों को रोगकारक बनाने वाले प्रमुख कारण, सूर्यादि ग्रह प्रदत्त रोग, मृत्यु प्रदायक ग्रह एवं कारण, राशि एवं भाव को रोगकारक बनाने वाले कारण, मेषादि द्वादशराशि प्रदत्त रोग, अष्टमभाव एवं द्वादश भाव से मृत्यु विचार।	25	8
III	**विविध रोग योग**- प्लीहा के योग, मुधमेह के योग, नपुसंकता के योग, बांझपन के योग, स्त्रीरोग, बवासीर, पंगुता के योग, पक्षाघात के योग, शीतपित्त के योग, क्षयरोगयोग, ज्वरयोग।	25	8
IV	नेत्र के विविध रोग योग, कर्ण के विविध रोग योग, कान कटने का योग, नासारोग, मुखरोग, जिह्वारोग के योग, तालु व कण्ठ के रोग, गले के अन्य रोगों के योग, जन्मकुण्डली द्वारा अन्य रोगों के कारणों का ज्ञान।	25	8

तृतीय सत्र

तृतीय पत्र-१०० अंक

इकाई	विषय	अंक	दिन सं.
I	**आयु का स्पष्टीकरण**- 1. निसर्गायु, 2. पिण्डायु 3. अंशायु. 4. लग्नायु 5. रश्मिजायु 6. चक्रायु 7. नक्षत्रायु षड्विधहरण, आयुनिर्णय ।	25	8

II	**मेदिनी ज्योतिष-** क) सामान्य सिद्धान्त, भावों के कारकत्व राष्ट्रिय सन्दर्भ में राशियों द्वारा कान्तिप्रदेश (दिशा) विचार, कूर्मचक्र का प्रयोग। सड्घट्टचक्र विचार।	25	8
III	चैत्रशुक्लप्रतिपदा का महत्व मेष में सूर्य संचार का महत्व मासिक-सङ्क्रान्तियां अमावस्या व पूर्णिमा, वर्षलग्न व जगत्लग्न, ग्रहण एवं अन्य घटनाएँ	25	8
IV	**मौसम ज्योतिष** मौसम सम्बन्धी भविष्यवाणियों के सामान्य सिद्धान्त, वृष्टिविज्ञान के सामान्य सिद्धान्त। रोहिणी, स्वाति और आषाढ़ीयोग, त्रिनाडी व सप्तनाडी चक्र, स्त्रीपुरुष योग, सद्योवृष्टिलक्षण।	25	8

तृतीय सत्र

चतुर्थ पत्र-१०० अंक

शास्त्रीय अध्ययन

भाग-क

इकाई	विषय	अंक	दिन सं.

I	जैमिनीसूत्र अध्याय- 1 (प्रथम एवं द्वितीय पाद)	25	8
II	जैमिनीसूत्र अध्याय- 1 (तृतीय एवं चतुर्थ पाद)	25	8
III	जैमिनीसूत्र अध्याय- 2 (प्रथम एवं द्वितीय पाद)	25	8
IV	जैमिनीसूत्र अध्याय- 2 (तृतीय एवं चतुर्थ पाद)	25	8

द्विवर्षीय ज्योतिष भूषण एडवांस डिप्लोमा पाठ्यक्रम

चतुर्थ सत्र

प्रथम पत्र-१०० अंक

बृहत्पाराशरहोराशास्त्र

इकाई	विषय	अंक	दिन सं.
I	नष्टजातकाध्याय	25	8
II	स्त्रीजातकाध्याय	25	8
III	ग्रहशान्त्यध्याय, अशुभजन्मकथनाध्याय, दर्शजन्मशान्त्यध्याय, कृष्णचतुर्दशीजन्मशान्त्यध्याय, भद्राजन्मदुर्योगशान्त्यध्याय	25	8
IV	एकनक्षत्रजातशान्त्यध्याय, संक्रान्तिजन्मशान्त्यध्याय ग्रहणजातशान्त्यध्याय, अभुक्तमूलशान्त्यध्याय।	25	8

चतुर्थ सत्र

द्वितीय पत्र-१०० अंक

इकाई	विषय	अंक	दिन सं.

I	**भावाश्रयफल (फलदीपिका)** सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु व केतु का लग्नादि द्वादशभाव में स्थित होने का पृथक-पृथक फल	25	8
II	**कलत्रभाव (फलदीपिका)** सप्तम स्थान गत ग्रहों का फल, सप्तमेश की स्थिति के अनुसार फल दम्पति कटुता, विवाह सम्बन्धी अरिष्ट घटनाएँ, बहु विवाह आदि योग।	25	8
III	**पंचमभाव, पुत्रभावफल (फलदीपिका)** पञ्चमेश, इनके शुभाशुभयोग पञ्चमभाव में पापग्रह, बिलम्ब से पुत्रोत्पत्ति योग, दूसरी पत्नी से पुत्र योग, पञ्चमभाव से अन्य विचारणीय विषय।	25	8
IV	**भावचिन्ता (फलदीपिका)** भाव का उत्तम फल कब होगा, बली व निर्बली भाव के लक्षण, भावनाश, भाव फल हानि काल, सौम्य तथा क्रूर लग्नेश की स्थिति का फल दो भावों के स्वामीग्रह के फल का विचार, भावसन्धि स्थित ग्रह, सूर्यादि ग्रहों के कारक विषय, द्वादश भाव के कारक आदि।	25	8

चतुर्थ सत्र

तृतीय पत्र-१०० अंक

इकाई	विषय	अंक	दिन सं.
I	**वियोनिजन्म विचार** पशुशरीर में राशि विभाग, पक्षी एवं वृक्षजन्मादि योग, निषेकविधि-ऋतुकाल परिमाण, क्लीबयोग, यमलादियोग, त्र्यधिक जननयोग।	25	8
II	सर्पवेष्टितदेहयोग, सूतिकाज्ञान, उपसूतिका ज्ञान, पितृ-परोक्षजन्म योग, औरस, क्षेत्रज और पौनर्भव सन्तति जन्मयोग, कुमारी से सन्तति जन्मयोग, दत्तकपुत्र योग, जारजत्व योग, पितृबन्धन योग	25	8
III	द्विग्रहयोग, त्रिग्रहयोग, चतुर्ग्रहयोग पञ्चग्रहयोग, षड्ग्रहयोग।	25	8
IV	ग्रहदृष्टिफल, स्वोच्च, मूलत्रिकोण, स्वक्षेत्र, मित्रक्षेत्र, शत्रुक्षेत्र, नीचस्थग्रहफलविचार, गण्डान्ततारा, अभुक्तमूल, अश्विनी-रेवती- आश्लेषा-मेघा, ज्येष्ठा-मूल नक्षत्रों के विभिन्न चरणों में उत्पन्न होने का फल, गण्डकाल फल विचार।	25	8

चतुर्थ सत्र

चतुर्थ पत्र-१०० अंक

स्वशास्त्रीय अध्ययन व संस्कृत शिक्षण

भाग -क

इकाई	विषय	अंक	दिन सं.
I	मुहूर्तचिन्तामणि संक्रान्ति प्रकरण	25	8
II	मुहूर्तचिन्तामणि गोचर प्रकरण	25	8
III	मुहूर्तचिन्तामणि वास्तु प्रकरण (श्लोक 1से 16)	25	8
IV	मुहूर्तचिन्तामणि वास्तु प्रकरण (श्लोक 17 से 29)	25	8